महाभाग्य

क्या है महाभाग्य!

मनुष्य के लिए शारीरिक दृष्टि से स्वास्थ्य ही महाभाग्य है।

मनुष्य के लिए मानसिक दृष्टि से शांति ही महाभाग्य है।

मनुष्य के लिए बुद्धि की दृष्टि से शास्त्रीय दृष्टि ही महाभाग्य है।

मनुष्य के लिए सामाजिक दृष्टि से अच्छे मित्र मिलना ही महाभाग्य है।

मनुष्य के लिए आध्यात्मिक दृष्टि से दिव्यचक्षु का उत्तेजित होना ही महाभाग्य है।

मनुष्य के लिए दो दिनों में एक दिन अच्छा भोजन मिलना और एक दिन उपवास करना दोनों ही महाभाग्य है।

परिश्रम करके धन-उपार्जित करना महाभाग्य है।

कठिनाई के समय में भी स्वाभिमान से जीना महाभाग्य है।

घर के आँगन में विविध पेड-पौधे लगाना महाभाग्य है।

पशु-पक्षियों का पालन और उनकी रक्षा करना महाभाग्य है।

अपने आसपास के वातावरण को कलुषित व दूषित न होने देना ही महाभाग्य है।

सारा दिन परिश्रम करके कुछ समय के लिए विश्राम करना ही महाभाग्य है।

हर दिन एक नई कला और विद्या सीखना हा महाभाग्य है।

हर दिन कुछ समय तक अच्छा संगीत सुनना ही महाभाग्य है।

अच्छे संगीत से खुश होकर कभी-कभी नाचना भी महाभाग्य है।

प्रतिदिन विविध प्रकार के खेल खेलना तथा महान लोगा की पुस्तकों को पढ़ना महाभाग्य है।

हर रोज एक घण्टे तक सज्जन संगति करना ओर मान का पालन करना ही महाभाग्य है।

अपनी कलाओं को दूसरों को सिखाना ही महाभाग्य है। किसी भी व्यक्ति की आँखों में आँखे डालकर सीधा देखना महाभाग्य है।

घर को शुद्ध रखना महाभाग्य है।

हर दिन सूर्योदय और सूर्यास्त को शांति से देख पाना भी महाभाग्य है। नदी और सागर में नहाना महाभाग्य है।

पूर्णिमा की रात्रि की अद्‌भुत सुंदरता को शांति से, अकेले अथवा सामूहिक रूप से अनुभव कर पाना महाभाग्य है। कहीं और कभी भी आँखे बन्द कर साँस पर ध्यानरखना ही महाभाग्य है।

मध्यरात्रि में नगर की सड़कों पर नि:शब्द स्थितियों में निभय होकर घूमना ही महाभाग्य है।

छोटे बच्चों के साथ सब कुछ भूल कर बच्चा हो जाना ही महाभाग्य है।

यह सब ही महाभाग्य है।